IJAER/ July-August 2017/Volume-6/Issue-4 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

भक्तिकाल के संत काव्य में व्याप्त मूल्य

डॉ राजकुमार सिंह परमार

वरिष्ठ व्याख्याता हिंदी

राजकीय कन्या महाविद्यालय लालसोट, जिला दौसा (राजस्थान)

सार

भक्तिकाल (13वीं से 17वीं शताब्दी) हिंदी साहित्य का एक स्वर्णिम युग माना जाता है। इस काल में अनेक संत कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से न केवल ईश्वर के प्रति भक्तिभाव व्यक्त किया, अपितु सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का भी प्रचार-प्रसार किया। भक्तिकाल, हिंदी साहित्य का वह स्वर्णिम युग है, जिसने 14वीं से 17वीं शताब्दी के मध्य भारत को अपनी भक्ति की लहर में डुबो दिया। यह कालखंड सामाजिक और धार्मिक उथल-पुथल का साक्षी रहा, जिसने आध्यात्मिक चेतना को जन्म दिया। भक्तिकाल की रचनाओं में प्रेम और विद्रोह का एक अनूठा संगम मिलता है। भक्तिकाल को दो प्रमुख धाराओं में विभाजित किया जा सकता है: सगुण और निर्गुण । सगुण भक्ति में ईश्वर को साकार रूप में, राम, कृष्ण आदि के रूप में देखा जाता है। इस धारा के प्रमुख संत कवियों में तुलसीदास, मीराबाई, सूरदास और रवींद्रनाथ शामिल हैं। उनकी रचनाओं में प्रेम भक्ति का भाव उफान पर है। रामचरितमानस हो या गीतावली, कृष्ण लीला का वर्णन हो या मीराबाई के पद - प्रेम ही उस दिव्य अनुभूति का आधार है, जो भक्त को ईश्वर से जोड़ती है। निर्गुण भक्ति में ईश्वर को निराकार माना जाता है। इस धारा के संत कबीर, रैदास, दादूदयाल आदि जाति-पाति और कर्मकांड के विरोध में खड़े हुए। उन्होंने सरल भाषा में ईश्वर प्राप्ति का मार्ग बताया। इनकी रचनाओं में समाजिक बुराइयों पर कटाक्ष और सार्वभौमिक सत्य की खोज का भाव पाया जाता है। भक्तिकाल की भाषा जनभाषाओं से निकलकर साहित्यिक रूप लेती है। अवधी, खड़ी बोली, भोजपुरी जैसी भाषाओं का प्रयोग आम जनता से जुड़ने में सहायक होता है। छंदों में भी विविधता मिलती है - दोहा, चौपाई, सोरठा आदि।

मुख्य शब्द

भक्तिकाल, संत, काव्य, व्याप्त, मूल्य

भूमिका

भक्तिकाल का महत्व हिंदी साहित्य में अद्वितीय है। इसने न केवल प्रेम और भक्ति की भावना को समृद्ध किया बल्कि सामाजिक समानता और सद्व्यवहार का भी संदेश दिया। भक्त कवियों की रचनाएं आज भी प्रेरणा का स्रोत हैं और हमें सच्चे प्रेम तथा आत्मिक शांति का मार्ग दिखाती हैं। निर्गुण भक्ति धारा के कवि ईश्वर को निराकार, निर्गुण मानते थे। इन कवियों में कबीरदास, रैदास, दादूदयाल और मलूकदास जैसे प्रसिद्ध संत शामिल हैं। उन्होंने अपने लेखन में सामाजिक बुराइयों, जाति-पाति के भेदभाव और पाखंड की कठोर आलोचना की। उनकी रचनाओं में सरल भाषा का प्रयोग हुआ है, जिससे उनका संदेश आम जनता तक आसानी से पहुँच सका।

सगुण भक्ति धारा के कवि ईश्वर को सगुण, साकार मानते थे। इस धारा के अंतर्गत राम और कृष्ण प्रमुख रूप से पूजे जाने वाले देवता थे। तुलसीदास जी की रचना रामचरितमानस, सूरदास जी के सूरसागर और मीराबाई के पद सगुण भक्ति के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इन कवियों ने राम और कृष्ण के जीवन लीलाओं का वर्णन किया और भक्त-ईश्वर के प्रेमभाव को उजागर किया। भक्तिकाल का साहित्य न केवल आध्यात्मिक बल्कि सामाजिक सुधार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भक्ति आंदोलन ने जाति-पाति के भेदभाव को कम करने और समाज में समानता लाने का प्रयास किया। कवियों ने अपने लेखन के माध्यम से सहिष्णुता, भाईचारा और सदाचार का संदेश दिया।

भक्तिकाल की भाषा सरल और जन-साधारण की भाषा थी। इसमें खड़ी बोली, अवधी, भोजपुरी और मैथिली जैसी बोलियों का समावेश था। इस काल में विभिन्न छंदों का प्रयोग हुआ, जिनमें दोहा, चौपाई, सोरठा और कबीरदास के नाम पर प्रसिद्ध कबीरदास छंद प्रमुख हैं। भक्तिकाल का हिंदी साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ा है। इस काल की रचनाएँ आज भी प्रासंगिक हैं और हमें प्रेम, भक्ति और सद्भाव का मार्ग दिखाती हैं। भक्त कवियों और संतों की वाणी सदियों से समाज का मार्गदर्शन करती रही है।

भक्तिकाल की दो प्रमुख धाराएँ हैं:

निर्गुण भक्ति धारा : इस धारा के संत कवियों ने "निर्गुण" स्वरूप वाले ईश्वर की उपासना पर बल दिया। अर्थात्, ईश्वर निराकार, निर्विशेष और सर्वव्यापी है। कबीर, रैदास, दादूदयाल और नानकदेव इस धारा के प्रमुख संत कवि माने जाते

हैं। इनकी रचनाओं में सामाजिक समानता, सद्व्यवहार और सच्चे ज्ञान का संदेश मिलता है। उनकी भाषा सरल और जनभाषा मिश्रित है, जिसे "सधुकड़ी" कहा जाता है।

सगुण भक्ति धारा : इस धारा के कवि ईश्वर को "सगुण" स्वरूप में मानते थे, अर्थात् सगुण ईश्वर किसी निश्चित रूप में विद्यमान है, जैसे राम, कृष्ण आदि। सूरदास, मीराबाई, तुलसीदास और संत ज्ञानेश्वर इस धारा के प्रमुख कवि हैं। इन कवियों ने राम और कृष्ण की लीलाओं का वर्णन किया है। रामचरितमानस, गीतावली और मीराबाई के पद इसी धारा के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इन रचनाओं में प्रेम की विभिन्न अवस्थाओं - शांत, दास्य, सख्य, वात्सल्य और माधुर्य - का चित्रण मिलता है।

भक्तिकाल की रचनाओं की भाषा सरल और जनभाषा मिश्रित है, जिससे आम जनता भी इनसे जुड़ सकी। भजनों, पदों, सवैयाओं और चौपाइयों जैसे विभिन्न काव्य रूपों का प्रयोग किया गया। इस काल में भक्ति आंदोलनों को भी बल मिला, जिसने समाज में एकता और सौहार्द का वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भक्तिकाल के संत काव्य में व्याप्त मूल्य

भक्तिकाल का प्रभाव आज भी हिंदी साहित्य और भारतीय संस्कृति पर गहरा है। भक्ति की भावना, प्रेम का संदेश और सामाजिक सरोकार आज भी प्रासंगिक हैं। भक्तिकाल की रचनाएँ हमें आध्यात्मिकता, प्रेम और सद्व्यवहार का मार्ग दिखाती हैं।

भक्तिकालीन संत काव्य में व्याप्त प्रमुख मूल्य

ईश्वर भक्ति: भक्तिकालीन संत काव्य का मुख्य केंद्र ईश्वर के प्रति अटूट भक्तिभाव है। संत कवियों ने ईश्वर को सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान और दयालु माना है। उन्होंने विभिन्न भक्ति मार्गों, जैसे- निर्गुण भक्ति, सगुण भक्ति, रसिक भक्ति, etc., का माध्यम अपनाकर ईश्वर के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की है।

मानवतावाद: भक्तिकालीन संत काव्य मानवतावाद का उत्कृष्ट उदाहरण है। संत कवियों ने जाति-पात, ऊँच-नीच, छुआछूत, etc., जैसी सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया और सभी मनुष्यों को समान माना। उन्होंने प्रेम, करुणा, दया, क्षमा, etc., जैसे मानवीय मूल्यों का प्रचार किया।

सादगी और त्याग: भक्तिकालीन संत कवियों का जीवन सादगी और त्याग की मूर्ति था। उन्होंने भौतिक सुखों की आसक्ति को त्यागकर ईश्वर भक्ति और आध्यात्मिक जीवन को अपनाया। उन्होंने लोभ, मोह, क्रोध, etc., जैसे विकारों को त्यागकर सदाचारपूर्ण जीवन जीने का संदेश दिया।

समाज सुधार: भक्तिकालीन संत कवियों ने समाज में व्याप्त कुरीतियों का विरोध कर समाज सुधार का कार्य किया। उन्होंने छुआछूत, जातिवाद, दहेज प्रथा, etc., जैसी कुरीतियों का विरोध किया और महिला शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह, etc., जैसे सामाजिक सुधारों का समर्थन किया।

आत्म-ज्ञान: भक्तिकालीन संत कवियों ने आत्म-ज्ञान को जीवन का परम लक्ष्य माना। उन्होंने लोगों को आत्म-चिंतन, आत्म-अवलोकन और आत्म-साक्षात्कार के लिए प्रेरित किया।

भक्तिकालीन संत काव्य न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, अपितु इसमें निहित मूल्य आज भी प्रासंगिक हैं। भक्त कवियों द्वारा प्रचारित मानवतावाद, सामाजिक समानता, सदाचार, आत्म-ज्ञान, etc., जैसे मूल्य आज भी हमें एक बेहतर समाज बनाने की प्रेरणा देते हैं।

भक्तिकाल (13वीं से 17वीं शताब्दी) हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग माना जाता है। इस काल में रचित साहित्य को संत काव्य के नाम से जाना जाता है। संत कवियों ने अपने काव्य में सामाजिक कुरीतियों, पाखंड, ढोंग और अंधविश्वासों का विरोध करते हुए भक्ति, प्रेम, करुणा, सदाचार और मानवतावाद जैसे मूल्यों का प्रतिपादन किया।

संत कवियों ने करुणा को मानव जीवन का अनिवार्य गुण माना है। उन्होंने कहा कि मनुष्य को सदैव दूसरों के दुखों का अनुभव करना चाहिए और उनकी सहायता के लिए तत्पर रहना चाहिए। संत कवियों ने सदाचार को जीवन का आधार माना है। उन्होंने कहा कि मनुष्य को सदैव सत्य, अहिंसा, क्षमा, दया, और न्याय जैसे मूल्यों का पालन करना चाहिए।

संत कवियों ने मानवतावाद का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि सभी मनुष्य समान हैं, चाहे वे किसी भी जाति, धर्म या लिंग के हों। उन्होंने जाति-पांति और ऊंच-नीच के भेदभावों का विरोध किया। संत कवियों ने समाज में व्याप्त कुरीतियों, जैसे दहेज प्रथा, बाल विवाह, छुआछूत, और अंधविश्वासों का विरोध किया। उन्होंने महिलाओं के अधिकारों और शिक्षा के महत्व पर बल दिया।

भक्तिकालीन संत काव्य न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि इसमें व्याप्त मूल्य आज भी प्रासंगिक हैं। संत कवियों ने अपने काव्य के माध्यम से मानव जीवन को सार्थक और सुखी बनाने का मार्ग दिखाया है।

भक्तिकालीन संत काव्य के कुछ प्रमुख कवि और उनके द्वारा प्रतिपादित मूल्य:

कबीर: निर्गुण भक्ति, मानवतावाद, सामाजिक समरसता

मीराबाई: प्रेम भक्ति, गोपी भाव

तुलसीदास: सगुण भक्ति, राम भक्ति, मर्यादा पुरुषोत्तम राम का आदर्श

नानकदेव: निर्गुण भक्ति, सिख धर्म की स्थापना

रविदास: निर्गुण भक्ति, सामाजिक समानता

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि भक्तिकालीन संत काव्य में अनेक विविधताएं हैं। प्रत्येक संत कवि ने अपने-अपने विचारों और अनुभवों को व्यक्त किया है।

भक्तिकालीन संत काव्य का हिंदी साहित्य और समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा है। इस काव्य ने हिंदी भाषा को समृद्ध किया और उसे जन-भाषा का दर्जा दिलाया।

भक्तिकाल (13वीं से 17वीं शताब्दी) हिंदी साहित्य का एक स्वर्णिम युग माना जाता है। इस काल में अनेक संत कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से न केवल भक्ति और अध्यात्म का मार्ग प्रशस्त किया, अपितु सामाजिक, नैतिक और मानवीय मूल्यों का भी प्रचार-प्रसार किया।

भक्तिकालीन संत काव्य का मुख्य केंद्र ईश्वर के प्रति अटूट भक्तिभाव है। संत कवियों ने विभिन्न रूपों में भक्ति का वर्णन किया है, जैसे - प्रेम भक्ति, ज्ञान भक्ति, कर्म भक्ति, और निर्गुण भक्ति। संत कवियों ने जाति-पात, ऊँच-नीच और छुआछूत जैसी सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया। उन्होंने सभी मनुष्यों को ईश्वर की संतान मानकर समानता का संदेश दिया। संत कवियों ने सदाचार और नीति पर बल दिया। उन्होंने सत्य, अहिंसा, दया, क्षमा, और प्रेम जैसे मूल्यों का पालन करने

का आह्वान किया। संत कवियों ने लोगों को आत्म-ज्ञान और आत्म-साक्षात्कार के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने बताया कि आत्मा ही सच्चा स्वरूप है और मोक्ष का मार्ग केवल आत्म-ज्ञान के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है। संत कवियों ने समाज में व्याप्त कुरीतियों और बुराइयों का विरोध किया। उन्होंने महिला शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह, और बाल विवाह जैसी सामाजिक सुधारों का समर्थन किया।

आध्यात्मिक चेतना: भक्तिकालीन संत काव्य ने लोगों में आध्यात्मिक चेतना का विकास किया।

सामाजिक सुधार: भक्तिकालीन संत काव्य ने समाज में व्याप्त कुरीतियों और बुराइयों को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

साहित्यिक समृद्धि: भक्तिकालीन संत काव्य ने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया।

नैतिक मूल्यों का प्रचार: भक्तिकालीन संत काव्य ने नैतिक मूल्यों का प्रचार-प्रसार किया।भक्तिकालीन संत काव्य न केवल हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, अपितु यह जीवन जीने की कला भी सिखाता है। भक्त कवियों की रचनाएं आज भी प्रासंगिक हैं और हमें सदाचार, नीति, और आध्यात्मिकता का मार्ग दिखाती हैं।

निष्कर्ष

संत काव्य का मुख्य आधार भक्ति है। संत कवियों ने भक्ति को कर्मकांड और बाह्य आडंबरों से परे, हृदय की सच्ची भावना बताया है। उनके अनुसार, ईश्वर प्रेम और करुणा का सागर है, और वह भक्त की भक्ति स्वीकार करता है, चाहे वह किसी भी जाति, धर्म या लिंग का हो। संत कवियों ने प्रेम को जीवन का सर्वोच्च मूल्य माना है। उनके अनुसार, प्रेम ईश्वर का सार है और प्रेम से ही ईश्वर की प्राप्ति होती है। उन्होंने प्रेम के विभिन्न रूपों, जैसे भक्त-भगवान प्रेम, मानव-मानव प्रेम, और प्रकृति प्रेम का चित्रण किया है।

संदर्भ

1. *रामचंद्र, शुक्ल. हिंदी साहित्य का इतिहास. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा. पृ° 156.*
2. ↑ *चन्द्रकान्ता. "Surdas (Sur Jay Shankar Prasad) - Chandrakantha". chandrakantha.com. मूल से 19 अक्तूबर 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि १० दिसम्बर २०१५.*

3. ↑ *"क्या रामदास सारस्वत थे कृष्ण भक्त सूरदास जी के पिता?". Punjabkesari. 2011-06-13. अभिगमन तिथि 2011-06-14.*
4. ↑ *"सूरदास भगवान कृष्ण के बहुत बड़े भक्त थे।". पंजाब केसरी.*
5. ↑ शुक्ल – "भ्रमरगीत-सार", साहित्य-सेवा-सदन, बनारस, 2016, पृष्ठ10
6. ↑ *"मीराबाई के जीवन की महत्वपूर्ण बातें". भास्कर. मूल से 16 अक्तूबर 2009 को पुरालेखित.*
7. ↑ *अयोध्या सिंह उपाध्याय, 'हरिऔध' (2014). हिंदी भाषा और उसके साहित्य का विकास. पटना: पटना विश्वविद्यालय. पृ° 291.*
8. ↑ *ब्र., व. (2009). हीरा, राजवंश सहाय (संपा°). हिन्दी साहित्य कोश भाग-१. वाराणसी: ज्ञानमण्डल लिमिटेड. पृ° 206.*